भारत की शास्त्रीय भाषाओं के

ग्रन्थ कुटीर

में आपका स्वागत है

WELCOME TO

GRANTH KUTIR

WORKS IN CLASSICAL LANGUAGES OF INDIA

ग्रंथ कुटीर

- **ग्रंथ कुटीर** राष्ट्रपति भवन में स्थित शास्त्रीय भाषाओं का पुस्तकालय है। "ग्रंथ कुटीर" शब्द का अर्थ है – पुस्तकों और ज्ञान का घर। यह अध्ययन, विद्या और बौद्धिक विरासत के प्रति भारत के गहन सम्मान का प्रतीक है। इस पुस्तकालय में इतिहास, शासन, संस्कृति तथा अन्य विविध विषयों से संबंधित पुस्तकों और पांडुलिपियों का समृद्ध संग्रह उपलब्ध है, जो भारत की लोकतांत्रिक एवं साहित्यिक परंपराओं को प्रतिबिंबित करता है।
- ग्रंथ कुटीर राष्ट्रपति भवन के भीतर एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक और बौद्धिक धरोहर के रूप में स्थापित है, जहाँ मूल्यवान प्रकाशनों और ज्ञान-कोषों का संरक्षण किया गया है।

Granth Kutir

- The *Granth Kutir* is the name given to the President's Library at Rashtrapati Bhavan. The term "Granth Kutir" means *abode of books and knowledge*. It symbolizes India's respect for learning, wisdom and intellectual heritage.
- It includes books and manuscripts on history, governance, culture, and global affairs etc. The library reflects India's democratic and literary traditions.
- It stands as a cultural and intellectual landmark within Rashtrapati Bhavan. Valuable publications are carefully preserved in the Granth Kutir.

भारत की शास्त्रीय भाषाएँ

भारत सरकार ने संस्कृति मंत्रालय के माध्यम से, तथा प्रतिष्ठित भाषाविदों और इतिहास विशेषज्ञों से परामर्श के पश्चात किसी भाषा को *भारत की शास्त्रीय भाषा* घोषित करने हेतु विशिष्ट मापदंड निर्धारित किए हैं। किसी भाषा को शास्त्रीय दर्जा दिए जाने पर तभी विचार किया जाता है, जब वह निम्नलिखित शर्तों को पूरा करती हो:

प्राचीनता : भाषा की प्राचीनता उच्च स्तर की होनी चाहिए, तथा उसकी प्रारंभिक रचनाएँ या अभिलेखीय इतिहास कम-से-कम **1,500 से 2,000 वर्ष** प्राचीन होना चाहिए।

प्राचीन साहित्यिक परंपरा : भाषा में प्राचीन साहित्य या ग्रंथों का एक समृद्ध भंडार होना चाहिए, जिसे वक्ताओं की पीढ़ियों द्वारा सांस्कृतिक विरासत के रूप में मान्यता प्राप्त हो।

ज्ञान-ग्रंथ एवं दस्तावेज़ी साक्ष्य : भाषा की साहित्यिक परंपरा में काव्य के साथ-साथ ज्ञानपरक ग्रंथ, विशेष रूप से गद्य रचनाएँ, सम्मिलित होनी चाहिए। इसके अतिरिक्त, भाषा की ऐतिहासिक निरंतरता और प्रयोग को प्रमाणित करने हेतु शिलालेखीय एवं अभिलेखीय साक्ष्य भी उपलब्ध होने चाहिए।

शास्त्रीय स्वरूप की विशिष्टता : भाषा का शास्त्रीय स्वरूप और उसका साहित्य उसके आधुनिक रूप से भिन्न हो सकता है अथवा उससे विकसित हुई बाद की भाषाओं या बोलियों से उसमें **विच्छेद** दिखाई दे सकता है।

किसी भाषा को शास्त्रीय भाषा के रूप में मान्यता प्रदान किया जाना भारत की बौद्धिक, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक परंपराओं में उसके महत्वपूर्ण योगदान को रेखांकित करता है तथा उसके संरक्षण, अध्ययन एवं संवर्धन के लिए केंद्रित प्रयासों को सुनिश्चित करता है।

Classical Languages of India

The Government of India, through the Ministry of Culture and in consultation with eminent linguistic and historical experts, has laid down specific criteria for the designation of a language as a *Classical Language of India*. A language is considered for Classical status if it satisfies the following conditions:

Antiquity: The language must have a high antiquity, with early texts or recorded history dating back at least **1,500 to 2,000 years**.

Ancient Literary Tradition: There must exist a substantial body of ancient literature or texts that are regarded as a cultural heritage by successive generations of speakers.

Knowledge Texts and Documentary Evidence: The literary tradition should include knowledge texts, particularly in prose, along with poetry. Additionally, the language should have epigraphical and inscriptional evidence demonstrating its historical continuity and usage.

Distinct Classical Form: The classical form of the language and its literature may be distinct from its modern form, or may show discontinuity with later languages or dialects derived from it.

The recognition of a language as Classical underscores its significant contribution to India's intellectual, cultural, and literary traditions, and ensures focused efforts towards its preservation, study, and promotion.

शास्त्रीय भाषाओं का संरक्षण एवं संवर्धन

- भारत की ग्यारह शास्त्रीय भाषाओं के संरक्षण एवं संवर्धन के उद्देश्य से ग्रंथ कुटीर की स्थापना एवं विकास राष्ट्रपति भवन में किया गया है।
- इसमें देश के विभिन्न राज्यों से प्राप्त पुस्तकों और पांडुलिपियों का एक समृद्ध संग्रह संकलित है, जो भारत की विविध भाषायी और साहित्यिक परंपराओं का प्रतिनिधित्व करता है।
- राष्ट्रपति भवन में भ्रमण के लिए आने वाले आगंतुक ग्रंथ कुटीर में शास्त्रीय भाषाओं की पुस्तकों और पांडुलिपियों के माध्यम से राष्ट्र की गहन सांस्कृतिक और साहित्यिक विरासत से अवगत हो सकते हैं।

Preservation & Promotion of Classical Languages

- With the objective of preserving and promoting India's eleven Classical Languages, the Granth Kutir has been established and developed within Rashtrapati Bhavan.
- It houses a rich collection of books and manuscripts sourced from various states across the country, representing India's diverse linguistic and literary traditions.
- Visitors to Rashtrapati Bhavan will be able to visit the Granth Kutir and experience a glimpse of the nation's profound cultural and literary heritage as reflected in its classical language books and manuscripts.

असमिया

शास्त्रीय भाषा का दर्जा 2024

- एक शास्त्रीय इंडो-आर्यन भाषा है, जिसकी उत्पत्ति पूर्वी मागधी प्राकृत की कामरूपी बोली से हुई है।
- यह भाषा समय के साथ प्रारंभिक, मध्य एवं आधुनिक चरणों में विकसित हुई।
- असम में वैष्णव आंदोलन के दौरान यह एक प्रमुख अभिव्यक्ति माध्यम के रूप में उभरी।
- श्रीमंत शंकरदेव इसके महानतम प्रवर्तक माने जाते हैं और वे असमिया संस्कृति तथा साहित्य के एक प्रतिष्ठित और प्रेरणास्रोत व्यक्तित्व के रूप में सुप्रसिद्ध हैं।

Assamese

Classical Language Status in 2024

- A classical Indo-Aryan language that originated from the Kamarupi dialect of Eastern Magadhi Prakrit.
- Evolved through early, middle, and modern stages over time.
- Became a major medium during the Vaishnavite movement in Assam.
- Srimanta Sankaradeva was its greatest exponent and remains an iconic figure in Assamese culture and literature.

बंगाली

शास्त्रीय भाषा का दर्जा 2024

- बंगाली इंडो-यूरोपीय भाषा परिवार की एक शास्त्रीय इंडो-आर्यन भाषा है, जिसका इतिहास बारह सौ वर्षों से भी अधिक पुराना है।
- मध्यकालीन बंगाली साहित्य ने इस क्षेत्र के सांस्कृतिक जीवन को गहराई से प्रभावित किया।
- संत-कवि चंडीदारस, चैतन्य महाप्रभु तथा रवीन्द्रनाथ ठाकुर जैसे व्यक्तित्व इसके साहित्यिक वैभव के प्रमुख स्तंभ रहे हैं, जिनके योगदान से बंगाली साहित्य और संस्कृति समृद्ध हुई है।

Bengali

Classical Language Status in 2024

- A classical Indo-Aryan language of the Indo-European family.
- A history of over 1,200 years.
- Medieval Bengali literature significantly shaped the region’s cultural life.
- Saint-poets Chandidas, Chaitanya Mahaprabhu & Rabindranath Tagore were key contributors to its literary heritage.

कन्नड़

शास्त्रीय भाषा का दर्जा 2008

- द्रविड़ भाषा परिवार की एक शास्त्रीय भाषा, जिसका इतिहास एक सहस्राब्दी से भी अधिक पुराना है।
- दक्षिण भारत के प्रमुख राजवंशों द्वारा इसे व्यापक संरक्षण प्राप्त हुआ। राजाश्रय के कारण कन्नड़ साहित्य, कला और विद्वत्ता का समृद्ध विकास संभव हो सका।
- इसका शास्त्रीय दर्जा इसकी प्राचीनता, साहित्यिक उत्कृष्टता तथा सांस्कृतिक महत्त्व को प्रतिबिंबित करता है।

Kannada

Classical Language Status in 2008

- A classical language of the Dravidian family with a history spanning over a millennium.
- Widely patronized by major South Indian dynasties. Royal support enabled the growth of rich Kannada literature, arts and scholarship.
- Its classical status reflects its antiquity, literary excellence and cultural significance.

मलयालम

शास्त्रीय भाषा का दर्जा 2013

- मलयालम द्रविड़ भाषा परिवार से संबंधित भाषा है, जिसकी विकास प्रक्रिया दक्षिण भारतीय भाषाओं के बीच अत्यंत जटिल रही है। इसे सामान्यतः प्राचीन, मध्य तथा आधुनिक मलयालम के चरणों में विभाजित किया जाता है।
- संगम साहित्य को सामान्यतः मलयालम की साहित्यिक रचनाओं का पूर्वगामी आधार माना जाता है।

Malayalam

Classical Language Status in 2013

- It belongs to the Dravidian language family, has a complex history of evolution among South Indian languages and is often divided into old, middle and modern Malayalam.
- Sangam literature is generally perceived as precursor to Malayalam literary creations.

मराठी

शास्त्रीय भाषा का दर्जा *2024*

- मराठी इंडो-आर्यन शाखा की इंडो-यूरोपीय भाषा परिवार से संबंधित है। इसका उद्गम महाराष्ट्रीय प्राकृत में होता है और इसका साहित्यिक और सांस्कृतिक इतिहास डेढ़ सहस्राब्दी से भी अधिक का दर्ज है।
- यह भाषा छत्रपति शिवाजी महाराज के दूरदर्शी नेतृत्व और संरक्षण में फल-फूली, जिन्होंने मराठी को प्रशासन, वीरता और सांस्कृतिक गौरव की भाषा के रूप में स्थापित किया।
- मराठी साहित्य और संस्कृति को संत-नायकों और कवियों जैसे संत ज्ञानेश्वर, संत नामदेव, संत एकनाथ, समर्थ रामदास और संत तुकाराम ने समृद्ध किया। इनकी आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता और साहित्यिक प्रतिभा मराठी समाज और साहित्य पर गहरा प्रभाव रखती है।

Marathi

Classical Language Status in 2024

- A classical language belonging to the Indo-Aryan branch of the Indo-European language family. It traces its origin to Maharashtri Prakrit and possesses a documented literary and cultural heritage spanning over one and a half millennia.
- The language flourished under the visionary leadership and patronage of Chhatrapati Shivaji Maharaj, who upheld Marathi as a language of administration, valor, and cultural pride.
- Marathi literature and culture were profoundly enriched by saint-poets such as Sant Dnyaneshwar, Sant Namdev, Sant Eknath, Samarth Ramdas, and Sant Tukaram, whose spiritual wisdom and literary brilliance continue to shape Marathi society and literature.

पाली

शास्त्रीय भाषा का दर्जा *2024*

- पाली एक शास्त्रीय इंडो-आर्यन भाषा है, जिसकी जड़ें दक्षिण एवं दक्षिण-पूर्व एशिया के धार्मिक इतिहास में गहराई से समाहित हैं।
- यह थेरवाद बौद्ध धर्म की पवित्र भाषा है, जिसके माध्यम से बुद्ध के उपदेशों को त्रिपिटक में संरक्षित किया गया। यह ग्रंथ परंपरा पहली बार ईसा पूर्व प्रथम शताब्दी में लिखित रूप में संकलित की गई, जिससे मौखिक परंपरा को पाठ्य रूप में सुरक्षित किया जा सका।
- पाली को इसकी प्राचीनता, समृद्ध साहित्यिक परंपरा तथा स्थायी आध्यात्मिक महत्व के कारण शास्त्रीय भाषा का दर्जा प्राप्त है।

Pali

Classical Language Status in 2024

- A classical Middle Indo-Aryan language with deep roots in the religious history of South and Southeast Asia.
- The sacred language of Theravāda Buddhism, preserving the Buddha’s teachings in the Tipiṭaka. The canon was first written down in the 1st century BCE, securing the oral tradition in textual form.
- Classical status reflects its antiquity, literary richness, and enduring spiritual significance.

प्राकृत

शास्त्रीय भाषा का दर्जा 2024

- प्राकृत प्राचीन तथा प्रारंभिक मध्यकालीन भारत में प्रचलित शास्त्रीय मध्य इंडो-आर्यन लोकभाषाओं के एक समूह को संदर्भित करती है। इसका विकास लगभग 500 ईसा पूर्व से 1000 ईस्वी के मध्य हुआ।
- अर्धमागधी प्राकृत को अनेक जैन आगम ग्रंथों तथा प्रारंभिक धार्मिक साहित्य की भाषा होने के कारण विशेष महत्व प्राप्त है।
- प्राकृत, संस्कृत और आधुनिक इंडो-आर्यन भाषाओं के बीच एक महत्वपूर्ण भाषिक सेतु के रूप में कार्य करती है। इसकी ऐतिहासिक प्राचीनता, साहित्यिक परंपरा और भाषिक महत्व के कारण प्राकृत को शास्त्रीय भाषा का दर्जा प्रदान किया गया।

Prakrit

Classical Language Status in 2024

- Denotes a group of classical Middle Indo-Aryan vernacular languages used across ancient and early medieval India.
- Evolved between 500BCE – 1000CE. Ardhamāgadhī Prakrit held special importance as the language of many Jain scriptures and early religious texts.
- It serves as a crucial linguistic bridge between Sanskrit and modern Indo-Aryan languages.

ओड़िया

शास्त्रीय भाषा का दर्जा 2014

- ओड़िया एक शास्त्रीय इंडो-आर्यन भाषा है, जिसकी उत्पत्ति ओड़ी प्राकृत से मानी जाती है, जो स्वयं मागधी प्राकृत से विकसित हुई।
- इस भाषा का विकास विभिन्न चरणों में हुआ— प्रोटो-ओड़िया, प्राचीन ओड़िया, प्रारंभिक मध्य ओड़िया, मध्य ओड़िया, उत्तर मध्य ओड़िया तथा आधुनिक ओड़िया।
- ओड़िया भाषा की प्रारंभिक साहित्यिक रचनाएँ वज्रयान बौद्ध परंपरा की चर्यापद परंपरा (सातवीं से नौवीं शताब्दी) में प्राप्त होती हैं। ओड़िया भाषा और साहित्य का इतिहास डेढ़ हजार वर्षों से भी अधिक पुराना है, जिसे सशक्त मौखिक परंपराओं ने समृद्ध किया।
- प्रारंभिक ओड़िया ग्रंथों में शिशु वेद (प्रथम काव्यात्मक कृति) तथा षोडशसुधानिधि (प्रथम गद्य रचना) उल्लेखनीय हैं।

Odia

Classical Language Status in 2014

- A classical Indo-Aryan language descended from Odra Prakrit, which evolved from Magadhi Prakrit.
- The language developed through distinct stages: proto-Odia, Old, Early Middle, Middle, Late Middle, and Modern Odia.
- The earliest Odia literary works appear in the Charyapadas (7^{th} to 9th century CE) of Vajrayana Buddhism.
- Odia language and literature have a continuous history of more than 1500 years and has been enriched by strong oral traditions.
- Early Odia texts include the Shishu Veda (earliest poetic work) and the Rudrasudhanidhi (earliest prose work).

संस्कृत

शास्त्रीय भाषा का दर्जा 2005

- संस्कृत इंडो-यूरोपीय भाषा परिवार की इंडो-आर्यन शाखा की एक शास्त्रीय भाषा है, जिसने भारत की सांस्कृतिक, धार्मिक और बौद्धिक परंपराओं को गहराई से प्रभावित किया है।
- संस्कृत का प्रभाव भारत की सीमाओं से परे दक्षिण-पूर्व और पूर्वी एशिया तक विस्तृत रहा है।
- संस्कृत को भारत की शास्त्रीय विरासत की आधारशिला के रूप में प्रतिष्ठित किया जाता है। इसके ग्रंथों में धर्म, दर्शन, विधि और विज्ञान जैसे विविध विषय समाहित हैं, जो इसकी व्यापक बौद्धिक परंपरा को दर्शाते हैं।

Sanskrit

Classical Language Status in 2005

- A classical language of the Indo-Aryan branch of the Indo-European family.
- It has deeply influenced India's cultural, religious, and intellectual traditions.
- Its impact spread beyond India to Southeast and East Asia.
- Sanskrit remains a cornerstone of India's classical heritage. Texts cover scriptures, philosophy, law, and science.

तमिल

शास्त्रीय भाषा का दर्जा 2004

- शास्त्रीय तमिल सबसे प्राचीन जीवित भाषाओं में से एक है और यह द्रविड़ीय भाषाई परिवार से संबंधित है।
- तमिल का प्रारंभिक साहित्य, जिसे संगम साहित्य (300 ईसा पूर्व – 300 ईस्वी) कहा जाता है, में ईट्टुत्तोकाई और पट्टुप्पाट्टु जैसी समृद्ध काव्य संकलनाएँ शामिल हैं।
- इसके अतिरिक्त, तमिल ने तिरुकुराल (Tirukkural) और भक्ति आंदोलन की धार्मिक स्तोत्र-रचनाएँ जैसी स्थायी और महत्वपूर्ण साहित्यिक कृतियाँ भी उत्पन्न की हैं।

Tamil

Classical Language Status in 2004

- Classical Tamil is one of the oldest living languages, belongs to the Dravidian language family.
- The earliest phase, Sangam literature (300 BCE–300 CE), includes rich poetic anthologies like *Ettuttokai* and *Pattuppāttu*.
- Tamil also produced enduring works such as the Tirukkural and devotional hymns of the Bhakti movement.

तेलुगु

शास्त्रीय भाषा का दर्जा 2008

- यह द्रविड़ीय भाषाई परिवार से संबंधित है।
- तेलुगु का साहित्यिक परंपरा हजारों वर्षों से निरंतर, समृद्ध और विविधतापूर्ण रही है।
- तेलुगु भाषा ने कई पारंपरिक और प्रगतिशील योगदान दिए हैं, जैसे पहला गणितीय ग्रंथ और आवधाना परंपरा का विकास।
- यह भाषा कार्नेटिक संगीत के विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

Telugu

Classical Language Status in 2008

- Belongs to the Dravidian language family.
- Telugu has an unbroken, prolific and diverse literary tradition of over a millennium.
- The Telugu language has made several pioneering contributions like first mathematical treatise and the first culture to evolve Aavadhaana tradition
- The language played a significant role in the development of Carnatic music as well.

ग्रंथ कुटीर संग्रह

- ग्रंथ कुटीर में भारत की 11 शास्त्रीय भाषाओं की 2,300 से अधिक चयनित पुस्तकों का संग्रह उपलब्ध है।
- इसके अतिरिक्त, दुर्लभ एवं शास्त्रीय भाषाओं की 50 मूल्यवान पांडुलिपियों का एक सुव्यवस्थित संग्रह भी यहाँ संरक्षित है, जो भारत की समृद्ध साहित्यिक और बौद्धिक विरासत को प्रतिबिंबित करता है।
- यह संग्रह महाकाव्यों, दर्शन, विज्ञान, धर्म तथा भक्ति साहित्य तक विस्तृत भारत की प्राचीन और निरंतर साहित्यिक परंपराओं को प्रदर्शित करता है।
- समग्र रूप से, ये कृतियाँ एक हजार वर्षों से भी अधिक अवधि में संरक्षित भारत की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर को परिलक्षित करती हैं।

Collection of Granth Kutir

- A collection comprises over **2300 curated books representing all 11 Classical Languages of India.**
- Curated collection of **50 rich and rare manuscripts of classical languages**, reflects the rich literary and intellectual heritage of India.
- The collection showcases India’s ancient, continuous literary traditions spanning epics, philosophy, literature, science, religion, and devotional literature.
- Together, these works reflect a rich cultural heritage preserved over more than a thousand years.

ग्रन्थ संग्रह

क्रम	भाषा	संख्या
1	असमिया	168
2	बंगाली	151
3	संस्कृत	176
4	कन्नड़	321
5	मलयालम	235
6	मराठी	142
7	पाली	97
8	प्राकृत	161
9	उड़िया	148
10	तमिल	348
11	तेलुगु	316

Granth Collection

SL	Language	No of Books
1	Assamese	168
2	Bengali	151
3	Sanskrit	176
4	Kannada	321
5	Malayalam	235
6	Marathi	142
7	Pali	97
8	Prakrit	161
9	Odia	148
10	Tamil	348
11	Telugu	316

पांडुलिपि

- पांडुलिपि वह हस्तलिखित रचना होती है, जो काग़ज़, वृक्ष की छाल, वस्त्र, धातु, ताड़पत्र अथवा किसी अन्य माध्यम पर लिखी गई हो, जिसकी आयु कम से कम 75 वर्ष हो और जिसमें वैज्ञानिक, ऐतिहासिक अथवा सौंदर्यपरक दृष्टि से महत्वपूर्ण मूल्य निहित हो।
- ग्रंथ कुटीर में प्रदर्शित 50 पांडुलिपियाँ राष्ट्रीय स्तर पर हुए सहयोग के माध्यम से संरक्षित भारत की बहुभाषी और बहुविषयक पांडुलिपि विरासत को उजागर करती हैं।

Manuscript

- A Manuscript is a handwritten composition on materials such as paper, bark, cloth, metal, palm leaf, or any other surface that is at least 75 years old and has significant scientific, historical, or aesthetic value.
- The 50 manuscripts of Granth Kutir showcase India’s multilingual, multidisciplinary manuscript heritage preserved through national collaboration.

असम में पांडुलिपि निर्माण की एक परंपरा

A form of Manuscript Making of Assam

असम में पांडुलिपि निर्माण की एक परंपरा

A form of Manuscript Making of Assam

असम में पांडुलिपि निर्माण की एक परंपरा

A form of Manuscript Making of Assam

KAAP DHEKIA

BAMBOO PEN

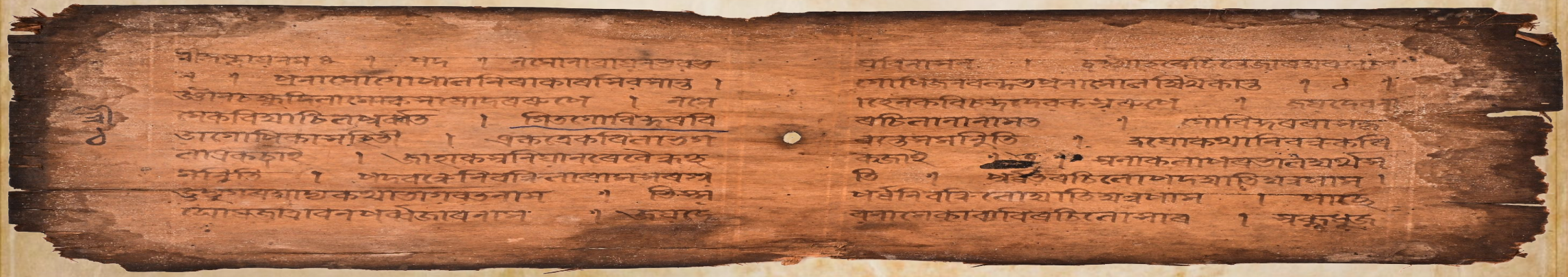

For videos visit: https://namami.gov.in/video-gallery

पांडुलिपि संग्रह

क्रम	भाषा	संख्या
1	असमिया	08
2	बंगाली	01
3	संस्कृत	10
4	कन्नड़	06
5	मलयालम	03
6	मराठी	01
7	पाली	00
8	प्राकृत	01
9	उड़िया	08
10	तमिल	04
11	तेलुगु	08
	कुल	**50**

Manuscript Collection

SL	*Language*	*No of Manuscript*
1	Assamese	08
2	Bengali	01
3	Sanskrit	10
4	Kannada	06
5	Malayalam	03
6	Marathi	01
7	Pali	00
8	Prakrit	01
9	Odia	08
10	Tamil	04
11	Telugu	08
	Total	**50**

पांडुलिपि संग्रह में योगदानकर्ता

संग्रह के निर्माण में योगदान देने वाले निम्नलिखित हैं:

१. असमिया : श्री मृदु मौचम बोरा; श्री विष्णु प्रसाद गोस्वामी; श्री नीलकमल गोस्वामी; श्रीमंत शंकरदेव कलाक्षेत्र सोसाइटी, गुवाहाटी; श्री श्री भावकांत देव गोस्वामी; श्री सुरेन पुकन; श्री श्री जनार्दन देव गोस्वामी; श्री श्री ननीगोपाल देव गोस्वामी; तथा श्री श्री नित्यानंद देव गोस्वामी

२. बंगाली : डॉ. श्यामल बेरा

३. कन्नड़: ओरिएंटल रिसर्च इंस्टीट्यूट एवं कुवेम्पु इंस्टीट्यूट ऑफ कन्नड़ स्टडीज़, मैसूरु, कर्नाटक; एवं बी. एम. श्री स्मारक प्रतिष्ठान, बेंगलुरु।

४. मलयालम : कालीकट विश्वविद्यालय, मलप्पुरम; तथा केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, दिल्ली।

Manuscript Collection Contributors

Following are the contributors to building the collection:

1. Assamese: Shri Mridu Moucham Bora, Shri Bishnu Prasad Goswami, Shri Nilkamal Goswami, (Srimanta Sankaradeva Kalakshetra Society-Guwahati) Sri Sri Bhabakanta Deva Goswami, Sri Suren Pukan, Sri Sri Janardan Deva Goswami Satradhikar, Sri Sri Nonigopal Deva Goswami Satradhikar and Sri Sri Nityananda Deva Goswami Satradhikar.
2. Bengali: Dr. Shyamal Bera.
3. Kannada: Oriental Research Institute & Kuvempu Institute of Kannada Studies, Mysuru, Karnataka; B.M. Shri Smaraka Prathisthana, Bangalore.
4. Malayalam: University of Calicut, Malappura; and Central Sanskrit University, Delhi.

पांडुलिपि संग्रह में योगदानकर्ता

संग्रह के निर्माण में योगदान देने वाले निम्नलिखित हैं:

५. मराठी: भांडारकर ओरिएंटल रिसर्च इंस्टिट्यूट, पुणे।

६. प्राकृत: भांडारकर ओरिएंटल रिसर्च इंस्टिट्यूट, पुणे।

७. ओड़िया: ओड़िया भाषा, साहित्य एवं संस्कृति विभाग, ओडिशा सरकार; तथा राष्ट्रीय पांडुलिपि मिशन, दिल्ली।

८. संस्कृत: कैवल्यधाम पुस्तकालय, लोणावला; तथा केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, दिल्ली।

९. तमिल: तमिलनाडु सरकार, चेन्नई; तथा केंद्रीय शास्त्रीय तमिल संस्थान, पेरुम्बक्कम।

१०. तेलुगु: ओरिएंटल मैन्युस्क्रिप्ट्स एंड रिसर्च इंस्टिट्यूट, हैदराबाद; तथा आंध्र साहित्य परिषद, सरकारी संग्रहालय एवं शोध संस्थान, काकीनाडा।

Manuscript Collection Contributors

Following are the contributors to building the collection:

5. Marathi: Bhandarkar Oriental Research Institute, Pune.

6. Prakrit: Bhandarkar Oriental Research Institute, Pune.

7. Odia: Odia Language Literature and Culture Department, Government of Odisha; and National Mission for Manuscripts, Delhi.

8. Sanskrit: Kaivalyadhama Library, Lonavala; and Central Sanskrit University, Delhi.

9. Tamil: Government of Tamil Nadu, Chennai; and Central Institute of Classical Tamil, Perumbakkam.

10. Telugu: Oriental Manuscripts and Research Institute, Hyderabad; and Andhra Sahitya Parishat Govt. Museum and Research Institute, Kakinada

शास्त्रीय भाषाओं में भारत का संविधान

- ग्रंथ कुटीर में शास्त्रीय भाषाओं में भारत के संविधान का एक विशेष संग्रह सुरक्षित है, जो राष्ट्र के सर्वोच्च संवैधानिक दस्तावेज़ को उसकी प्राचीन भाषाई परंपराओं में संरक्षित करने के महत्व को दर्शाता है।
- राष्ट्रपति भवन में शास्त्रीय भाषाओं में संविधान का प्रदर्शन, भारत के संवैधानिक मूल्यों और उसकी सभ्यतागत विरासत के बीच गहरे समन्वय को रेखांकित करता है।
- यह संग्रह संविधानिक आदर्शों के प्रसार में शास्त्रीय भाषाओं की भूमिका को उजागर करता है तथा राष्ट्रपति भवन को भारत की कानूनी, सांस्कृतिक और बौद्धिक धरोहर के एक महत्वपूर्ण भंडार के रूप में स्थापित करता है।

Constitution of India in Classical Languages

- Granth Kutir houses a special collection of the Constitution of India in Classical Languages, reflecting the importance of preserving the nation's supreme constitutional document in its ancient linguistic traditions.
- The display of the Constitution in Classical Languages at Rashtrapati Bhavan underscores the integration of India's constitutional values with its civilizational heritage.
- This collection highlights the role of classical languages in disseminating constitutional ideals and reinforces Rashtrapati Bhavan as a repository of India's legal, cultural, and intellectual legacy.

ई-संसाधन

- राष्ट्रपति भवन का ग्रंथ कुटीर वेब पोर्टल (https://rb.nic.in/granthkutir) भारत की शास्त्रीय भाषाओं में उपलब्ध ई-पुस्तकों और डिजिटीकृत पांडुलिपियों सहित चयनित डिजिटल पुस्तकालय संसाधनों तक पहुँच प्रदान करता है।
- यह मंच चयनित प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों को ऑनलाइन उपलब्ध कराकर अनुसंधान, संदर्भ कार्य और शैक्षणिक उपयोग को समर्थ बनाता है।
- डिजिटीकृत पांडुलिपियों का संरक्षण और प्रस्तुतीकरण मानक अभिलेखीय एवं संरक्षण प्रक्रियाओं के अनुरूप किया गया है। ये ई-संसाधन दुर्लभ शास्त्रीय ग्रंथों की खोजयोग्यता को बढ़ाते हैं और डिजिटल माध्यम से पुस्तकालय सेवाओं का विस्तार करते हैं।
- यह पोर्टल ग्रंथ कुटीर संग्रह का एक महत्वपूर्ण डिजिटल विस्तार के रूप में कार्य करता है ।

E-Resources

- Granth Kutir houses a special collection of the Constitution of India in Classical Languages, reflecting the importance of preserving the nation's supreme constitutional document in its ancient linguistic traditions.
- The display of the Constitution in Classical Languages at Rashtrapati Bhavan underscores the integration of India's constitutional values with its civilizational heritage.
- This collection highlights the role of classical languages in disseminating constitutional ideals and reinforces Rashtrapati Bhavan as a repository of India's legal, cultural, and intellectual legacy.

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के साथ सहयोग

- राष्ट्रपति भवन का ग्रंथ कुटीर वेब पोर्टल (https://rb.nic.in/granthkutir) भारत की शास्त्रीय भाषाओं में उपलब्ध ई-पुस्तकों और डिजिटीकृत पांडुलिपियों सहित चयनित डिजिटल पुस्तकालय संसाधनों तक पहुँच प्रदान करता है।
- यह मंच चयनित प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों को ऑनलाइन उपलब्ध कराकर अनुसंधान, संदर्भ कार्य और शैक्षणिक उपयोग को समर्थ बनाता है।
- डिजिटल पांडुलिपियों का संरक्षण और प्रस्तुतीकरण मानक अभिलेखीय एवं संरक्षण प्रक्रियाओं के अनुरूप किया गया है। ये ई-संसाधन दुर्लभ शास्त्रीय ग्रंथों की खोज-योग्यता को बढ़ाते हैं और डिजिटल माध्यम से पुस्तकालय सेवाओं का विस्तार करते हैं।
- यह पोर्टल ग्रंथ कुटीर संग्रह का एक महत्वपूर्ण डिजिटल विस्तार के रूप में कार्य करता है ।

Collaboration with Indira Gandhi National Centre for the Arts

- The IGNCA has played a significant role in the establishment of Granth Kutir at Rashtrapati Bhavan.
- The IGNCA is responsible for the professional management and handling of the manuscript collection in accordance with prescribed conservation norms.
- IGNCA also ensures the proper display, preservation, and care of the manuscripts, thereby safeguarding this invaluable cultural and intellectual heritage for future generations.

Thank You